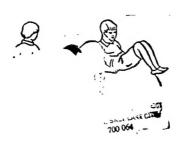


## गळी रा लाडैसर

राजस्थानी में टाबरां री कहाण्यां



याबुत प्रकाशन नेहरू प्रोक्त, शीवाना गेट

थीकानेर (शत्र)

च श्री लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत

मूत पूर्व सांसद



लक्ष्मी निवास D—194 बनी पार्क बद्युर 302006 दिनांक 6-3-89

10693

साज स्रोपनी मायह भागा में टाबरों नार पीयूनों पी पत्ती बाइना है। बाळ नाहित्य निस्की बोर्ड सोर्थ दास मी है। टाबर रिव मू परें, सबके सर उत्ता रा दाया मनो मार्थ साध्या सरवार जसे। ऐसी माहित्य ही दुन्तदारी होते।

हाउद्देश कोरो एक वृद्धित हाबरो नार निरियोदी क्षेत्री है। बिला है जिस्ति मुल्य से खालारी से साथ, सार्वाणी कौती वृद्धना, मुल्य नाद हैम सर सलाहार से भावता हाबरों है बाली मुख्य मान्ने स्वयादा सर सम्माहा से बाली वृद्ध सान्ने बदस है।

द्रात संस्तान सम्द्रन वरीय वसन की ने न्हानी देवनाहे है के हरण जात से योग्या सामें है निनता रेवें। क्या ने वागसाधी दिने या न्हानी नुख बाजना है।

#### राजस्यानी माया साहित्य ध्वं संस्कृति झकादमी बीका<sup>नेर</sup> रै मोधिक मार्थिक सहयोग मूं प्रकाशित

© अब्दुल यहीद कमल

प्रकाशक बाबुल प्रकाशन बीकानेर

प्रथम संस्कररा 1989 मोल—12, रिपिया आवरण—स्वामी श्रमित चित्र-श्रासकरण गोस्वामी

> मुद्रक कल्याणी प्रिन्टसं बीकानेर

ALEE RA LADESAR-RAJASTHANI STORIES FOR CHILDRES

By ABDUL VAHEED KAMAL PRICE Rs. 12. 00 ONLY.

म्हारै हिवड़ै रा हार, म्हारै काळजै रो कोर

डिम्पल, सोनू, कबीर ब्रर सोयव रै सागै-सागै

स्हेरां ग्रर गावां री गळयां रै उरा लाडैसर

टाबरां नै मोकळै हेत सूं या पोथी सौंपूहूं

टावरा न नाकळ हत सू आ पाया सापू ह जिका वडा होय'र म्हारी जुगों संस्कृति रो

रिछपाल करेला।

8414 47711 .

#### म्हारा दो बोल-

हेत कर्यां हेन हुवै, हुवै जोग संजोग। सारी बोलै मावड़ी, मोठा बोलै लोग।।

इए पोथी री कहाण्यां मांय जे की खारा वोल भी है तो वे म्हां सातर घरणा ई मीठा है। क्यूं क ऐ कहाण्यां म्हारी मायड़ भाषा राजस्थानी में लिखिज्योड़ी है। जिकी भाषा मिश्री दांयी मीठी है, दूव दांयी घोळी है ग्रर ग्रमृत दांयी गुराकारी है। ऐड़ी मायड़ भाषा ग्रर संस्कृति मार्थ म्हां राजस्थान्यां नै घर्णो ई गर्व है।

जे ऐ कहाण्यां म्हारे छोटै-छोटै टावरां नै पढणे में आछी लागैली तो म्हारो लिखणो सार्थंक हुवैलो । ग्रार जे इएा कहाण्यां रै पढणे सूं यां नै राजस्थानी रै दूजें ठावा चावा लेखकां री कहाण्यां पढणे रो चाव लागेली तो मायड़ भाषा राजस्थानी रो मोकळो वधेपो हुवैलो ।

#### इण पोधी री कहाण्यां मांय सू

कूंपळ — परती मांरी रिष्ठपाळ सार, दुनियां रेस गळँबच्चारो घो हेती है क परती मांरो रूप मी बिगाड़ी। घे तो दुनिया देखती। पए म्हांछोटी-छोटी बंबती कूंपळाने भी दुनिया देखताद्यो। दूल स्नातर वस वरणावस्था बद करो। दुनियाँ रैटावरां पर दया करो। नी तो स्नासफ चेतावसी है क

> जिको खाई स्रोदेनौ, बो खाई में गिर जावैसो । जिको घरती मानै मेटोसो, बो घरती मूंमिट जावेसौ ।।

बटाऊ जे म्हारी जूबी पोडी इस मांत साथ रेदेस री सम्कृति ने जास लेवे तो साज साथों में सत रेमारण मूंकोई कोनी दिया सके। पस एक सस्कृति सांवर्सों देस री धोर है क साथ मू बढ़े रो केवसी मानस्त्री वाईते। इहें सूबी-बड़ेरी होवर्सी रेमार्ल सा केवसी चाजू हुक जद तूं इस ने रात माईकेय दिया यह सो तर्न माईकेय दियो तो सबै में माई साईहो। सर माई साईसे सम्पद्दी, साव साटर, देस सातर सर समाज सातर साफो कोनी हुई .....

गळी रा सार्डसर— बा देल्थो, क एक पाबस्थोड़ी बक्ती दो तीज छोर्ट छोर्ट कूकर्या ने जुगाय रेगी हो। बकरड़ी ने दूकर्या साजर पाबस्थोड़ी रेगर पापो योदो देर सातर प्राप्त रो आपी भूतती। जर वा आप रे प्राप्त माय पाई तो वो रेहिवई रो धतस, मां रो मनता मूं छळक उदयो। या सोच्यो जर एक बक्ती कुती रें जायोड़ां दूकर्या ने देव'र प्राप्त रो दूष पाय गई है तो

म्हें एक मिनल रैं जाने नै कोनी पाल सहूं ...

कूंपळ— ६ बटाऊ— १६ गळी रा लाडैसर— ३१

# क्रूंपळ

बागली बस्ती रै बीचो-बीच एक नीम नो पेड है। घो पेड लाभू ने मीम रै नाम मूं जाणी जे है। लाभू नै मर्था चाळीम बन्म होयम्या। लाभू रै कोई घौलाद कोनी ही। पण्याची एक नीम नोपंट नमार धमर होयम्यो। प्रये, जद तार्ड घो नीम रो पेट रेयमी लाभ रो नाम चालतो ई रेयमी।

लाजू रोधो नोम, बस्ती री धल्लामी बाला मुलको रेबो है। धो कितराई पत्तमञ्ज्ञ देस्या घर कितरा ई यसन गुजार्वा है। इस हे नोचे बस्तो री पंचायत मेळी होयार कितरा ई सोटा-च्या फैसना कर्या है। इस हो छापों में बस्ती साटावर भेरवा है, कृद्या है। घर छोडे मूं बटा हुना है।

दम नीम रे नीचे धनजो सेठ रो देशे दोन्, घर दोश पटवे रो देशे सम्मू सेत सेने तो वदर्र घाएम मे लई। बच्म घर दान् रो धाईलो वर्षा सम्बद्धी दस्ती रा स्रोत साझी नर्या पूजारी। ऐ दोन् विवसी धाईज धाए-सरी भार पर मूं साथ घावी। तीम री स्थान नीचे बेटज बारा रा कुटका तेवें घर सेला रा किस्सा बरें। ग्राज !

. लाभू रै नीम रै नीचे, कम्मू पैली आय'र बैटग्यो । वो उदास मा है कीं सोचो हो । योड़ी देर में दोनू भी आग्यो । परा कम्मू सुद-बुदसी होणें चुपचाप बैठ्यो हो । कम्मू रै कम्नै दोनू कद आयो इरा रो वीं नै विट्डॉ ई भान कोनी हुयो, वो तो जियां हा वियां ई बैठ्यो रैयो ।

कस्मूरी चुप्पी नै देस'र दीनू वीं कानीं ताकतौ रेयां .... ति हैं रैयो । पर्छ दीनू चाएाचको बोल्यों, ''कस्मू ... ।''

कम्मू चमकस्यो । अर उला रै होठां पर सूकी मुळक छितरगी । पण, ' छिला रो आ मुळक, धीरै-धीरै सुकड़तो चली गई । इला बीच दोनां री ग्रं ग्रामनै सामनै टकरी । अर देखतां ई देखतां कम्मू उदास होग्यौ । बो हैं री दुनियों में पूठी डूबम्यौ ।

> दीनू बोल्यौ, "कम्मू.! तूं कद श्रायी ?" "म्हॅं……", कम्मू श्रागै कीं कोना बोल्यो ।

दीनू कम्मू नै चर्चड़ 'र पूछ्यो, "कम्मू, बता तो सई, तू कद आयी

पण कम्मू धर्वभो चुप हो।

े दोनू घीरज मूं कम्मू नै पूछ्यी, "बारो ग्रन्था तेन्नै मारबी और >

या धारी श्रम्मी तन्नै रोटी कोनी दी ?" दीन बी नै बार-बार पूछतो रेगी। पग् कम्म् इस मूं मस कानी हुयौ ।

दीन हळकी सी रीस में बोल्यी, "जे अबके हूँ किने, बताबेली तो महैं भो म्हारै घरै जावू हूं बर बाज सूँ बावां थू माईलूम्ही हि

परम कम्मू तो फेर भी कोनी बोरवी। दीन बाप रै हाथ री मुट्टी भींच'र मुडै माथै राख'र- -थू-थू कर'र

जावगा लाग्यो । इतरै में फम्मू दीनू रौ कुड़तौ पकड लियी । अर कागज रै ठूनै दायी फीसम्यौ । बो फुट-फुट'र रोवतौ-रोवतौ, सुबक्यां भरतौ-भरतौ

चोह्यी," नी ः नी ः दीन्ः तुं मन्नै छोड'र मत जा। ः तुं  $F_{i,k}$ मनै छोड'र मत जा। महारो दुनिया में कोई कोनी है।"

दीन कम्म रो झांख्यां रा झांपू पुछवा । फैर गळगळी होय'र बोल्यां,

"कम्मूरो मत " कम्मुरो मत, यार ! म्हनै बतातो सई "। हयौ वर्गई ?"

कम्मू स्वक्यां भरती-भरती वोल्यो 'दीनु ! म्हारी ग्रम्भी म्हारी माईमां है। या तो तूं जाणै ई है। याज वा म्हारै अव्या नै म्हारी इतरी चुमली खाई क महारी भव्या मनै व्होत मार्यो । घर मनै रोटी भी कोती दी।"

बीन पूछ्यी, "परा वयु" ?"

15

हेहर ।

कम्मू बतायो, "म्हारी श्रम्मी, श्रब्बा नै चुगलो खाई क स्रो हरा जादो, कारखाने कोनी जावै ग्रर सगळ दिन गळ्यां में रुळतो फिरै।'

दीनू केयो, ''तो यार तूं कारखाने क्यूं कोनी गयो ?''

कम्मू बोल्यो, ''दोनू, म्हें गलोचां रै कारखाने मांय काम करतो हो परा दो तीन दिन पैलो राज रा श्रादमो भाया । कारखाने रै बाबू नै कंगे क दस बारा बरसां सूं छाटी उमर रै छोरी छोरां नै नी राख्या जावै। नी

तो कारखाने रो चलाए कर देवांला।"

दीनू अचंबे सूं पूछ्यो, अो चलास काई हुवे है ?"

कम्मू की देर सोच'र वोल्यो,'' चलागुः''''यार, चलागु हुवै है। दीन् पूछ्यौ चलारा रो मतलय काई हुनै है ? कम्मू बतायौ, क राज

लोग कारखाने ने बन्द करा देवेला। अर, हां, वे आ बात भी बताई ब्रापर्गा उमर रैटावरां नै, मजूरी पर नीं राखरा रो सरकारी कानून <sup>प्र</sup> है। जदई तो कारखाने सूंसगळां छोरी-छोरां ने काढ़ दिया।" पछे कम् एक लांम्बो सिसकारो लेय'र बोल्यो, "श्रव दीन इसा में म्हारो काई दोस

है ? अबै म्हें कठ जाऊ ? आज संसार में म्हारी मां होती तो · · · · ? " इतरो वोल'र कम्मू फेरूं फूट-फूट'र रोवएा नै लागग्यो । दीनू कम्मू री बात सुण'र उदास होग्यो । वो म्राप रै पग रै मंगूठै सूं

परती कुचरतो-कुचरतो बोल्यो, "यार, तूं, रो मत । तूं किसा रैं हैं होटल

ं में काम बयुं को नी करैं ? श्रापणी उमर राघणाकरा टावर होटलां मार्थ ं काम करै है ।"

कम्म बतायो, ''दीन पैली महं काळ री होटल माथ काम करती हो। पगा, उठै मूं भव्या मनै काम छुड़ाय दियो ।

दीन प्रछयी, "बय" ?

41

į.

-

15

et/1

'ग्रन्मा कैयो काळ पड़ेमा व्होत कम देवे है इए। खातर कम्मू ग्रव तनै बोजै होटल माथै काम करली है । ग्रर म्हनै काळु रै होटल सु काम छुडाय'र लाल रै होटल माथै काम लगाय दियो ।" दीनू नै कम्म बतायो ।

"तो यार, तुं उठै मूं फैर काम नै बयूं छोड्यौ ।" दीन इए। बार त कम्म नै दोस्रो समभ र जोर मूं बोल्यो ।

कम्म उदास होय'र योल्यी, "यार, दीनू तूं म्हारै माथै अण्ती रोस र करै है ? म्हारी बात तो सुरा ''''

"यस, तूं भा केवेली क बापू उठ सूं काम छुडाय दियो । भ्ररै गेला ्र विसं, पूजा क्यान कर कर - . . . भाई. काम करणे वाळे री सद जगे पूछ होवे हैं।" दीनू, कम्मू ने सीख

सीखावण रै ढंग मूं बोल्यो ।

"नीं,दोनू,मा बात कोनी ही । लालू रै होटल माथै मनै टावर जागा'र 

बीं राबीजानौकर व्होत मारता हा। बापू नै जद म्हें ग्रा बात केंबती तो

वळी रा लाईसर/१३



वापू मनै ई मारता । अर अम्मी केंवती भी हरामसोर, कामचोर, मजूरी कोर्ने करसी चाव है । होटल री कप, प्लेट या गिलास किसा ई बीज नौकर रें हाथ मूं टूट-फूट जावती तो सगळा म्हारो नाम लगा देवता । तारील मार्थ पईसा लेवसा ने जद अववा आवता तो लालू थोड़ा सा पईसा दैय'र कैय देवती क थारे वैटे रें हाथ मूं इतरा रिपियां रो उजाड़ होयस्यो । पर्छ मनै परं लैवजा'र अववा अर अम्मी म्हार्र मार्थ थप्पड़, मूनका, लाठी, इंडा मूं बरल पड़ता । अव, तूं बता नई काई कर हे ?महें कठई कूपी-खाड कर लेवूं या वैर लाय'र मर जाऊं ? ईण जीणे मूं तो मरसा आही है," इतरी कैय'र कम्मू

कम्मू रो एँड़ी बातां सुस्प'र दोन् भी उदास होयग्यो । पर्स, कम्मू नं । वस बंबावतां घकां नेयो, "बावळा एँडी बातां नीं कर। थारा तीन भाई-वैन पैलाई मरावा। अबै त एक ई तो धारै वाप रो वेटो है। अर. जे त' ल नै काई-किसी कर लैपमी तो थारै बाप रो तो बंस ई दूब जासी। न्हारी ै, केबे है क बैटे मुंबस चाल है अर बाप रो नाम चाल है \*\*\*\*।

परा विचाळ ई कम्मु बोल पड यो, 'दीन, म्हारी ग्रव्या भी ग्राप रो म चलावरा खातर कठैई पोपळ रो पेड लगा लेबसी। पछै, जियां लाभ रो म बोल्यो जावे है वियां ई पीरु रो पीयळ बोल्यो जासी । अर इस्त सं । रै श्रद्धा रो नाम चालती रैसी।

दीन, कम्मू री बात कोनी मानी । वो दीनू नै मनभायां, "मृग्तु नै

न, जठ माई-मा हवे है । बठ सगळे टावरां माधे ऐसी बाता ई हवे है । । बात भी महारी माँ मनै वेया ही । पछै, पारी सम्मा जद मुँ धारै प्रख्या लारै ब्राई है। तनै तो इस दैवती नैवी है। यर, दूजा नै सामै धारै मुं ड़ी हेत राज्या रो नाटक करती रैयी है। य-र इस दात ने मगद्रा ग्रादा र्यां मूं जाणे है। क वा कितोक भूटी है ? घर विवोध नाची है ? बी री ों में हांदुबा इस खातर मिलाबें हे बयू किया नाकी राह है।"

कम्मू भट मुंदीन रै मू है मार्थ हाथ राखंर बोन्यो, "नी, दीन, हो। एए नै रॉड नी बोल। बाम्हारों मारी ठोड़ फाई है। से उसा नै मा

ें मान है। महै उस रो घसो ई मादर करे हैं। महै उस सी तेया

तरमूं हूं। ''' पण मने पुण मां यो हेन हैं। में मी रो मा तरमूं हूं।'''' पण मने पुण मां यो हेन देवें रे कृष्ण मानीन महें किया री नेवा करूं?'' इनसे क्षेत्र रूम्मू मान रो तिर विचाळे राहार पुक्कमण ने सामयो ।

ष्ठवं दीनूरी ष्रौरया भी टबडवा षाई । यो सिसक्यां वे बोल्यो, "कम्मू, म्हारा सर, म्हानं नक्षा में बनायों के आ धरती ह री मां है । ब्रा थारी भी मां है । तूं टल री मेवा कर । ब्रा ब्रासीस देवेली । हेल देवेली । घर दुनियां में बारो नाम ऊंनों कर

ब्रासीस देवला । हत देवली । घर दुनिया में यारो नाम ऊंनोकरें इतरें में कम्मू रो ब्रव्वा पीन, रोस मूं तांवे दायों लान होयें उसा दोनां कानीं ब्रायती दिख्यों । पीन रे हाथ में होंडो भी हो।



दीन चाएाचको बाह्यो, "कम्मू, धारी ग्रव्या डंडो लेय'र ग्राय ी है।

कम्मू बर दीनू हवका-वक्का रैयग्या। वे दोनूं डर मूर्ने कृपिसा नै गग्या । पर्एा, फर, उरए रै माथै में ब्राई क भाग चालीयं अपर वे रूं उठ मूं भाग छुट्या । पीक उसा बोनू रै लार भीरयो-1-पिशृ विः ए रै हाथ कोनी आया ।

मागै सड़क माथै एक जुलूस जाय रेयो हो । जुलूस दुनिया री ए मोटो ताकतां रै विरोध में हो जिकी ताकतां परमाण वमां स् ज़ी रो रूप बिगाडनी चाबै है। घर दुनियां रै मिनखां नै मारगी वे है।

कम्मू बर दीनू, जुलूस री उरा भीड़ मांय मिनग्या । जुलूग में ग जोर-जोर सुनारा लगा रैया हा।

मुणो, सुणो "ब्रा मिनलां जुणी "" वार-वार नी धार्यसी। धरती नै मेटण बाळी सगती "धरती सु मिट जावैछी।"

भवे कम्मू घर दीन जुलूस रै घागै-प्राप्ती जोर-जोर सु नाग गायता चाल रैया हा । जुलूस जिलाधीम रै दफ्तर कानी तेजी मुं भि बढ़ रेयो हो । थोड़ी देर में जुल्म जिलायोश र दफ्तर धारी

मि'र स्कायो । उठ मुलकां वायरो भोड़ नै रोकण वास्ते पुलिस रा गि सह्या हा ।

उए। जुलूस रो एक बादमी माईक सुं जोर-जोर मुं चैतावारी

प रैंग़ो हो, क श्री जिलाधीस जी, इस्त नगर रै लोगां नी झा चैता-" रै मोटी-मोटी सगत्यां ताई पूगा देवे, व व पन्माम दम जेड़ा घाती हथियार बरागविएा वंद कर देवै जिरा सुं घरती माता ॥ इरा रै मिनलां री नास नीं हवे।

ब्राबात सुर्एंर कम्मूहिम्मत करी क घरती मांरीसेवाकर्णै रो ग्रो सांतरो मौको है ग्रर वो माईक ताई पूगम्यो । ग्रर वो माईक माथै जोर-जोर सूं बोलएा लाग्यो ।

घरती मां री रिछपाळ सारू, दुनियां रै सगळै वच्चा रोग्रो है क घरती माँ रो रूप नी विगाड़ी। थे तो दुनिया देखली। देखरा द्यो । इस खातर वम बसावसा बंद करो । दुनियां रै टा पर दया करो । नीं तो ग्रा साफ चैतावस्ती है क

"जिको खाई खोदैलो ""वो खाई में गिर जानैलो जिको घरती मां नै मैंटेलो " वो घरतो सूं मिट जागैलो।

कम्मूरा ऐ नारा गगन में गूजिए लाग्या। ग्रर एक छोटे

बाळक रो ऐडो होसलो देख'र जुलूस रा लोग नाचरा न लाग्या। क बाळक रा एक एक मा नै क्रापर काशां मार्थं उठा लियो । उस माळावां सूं लाद दियो । कम्मू रो अब्बा पोरू भी उठै आयायो । व दूर खड़्यो देख रैयो हो । उसा रै कन्नै खड्यो एक प्रादमा बोल्यो पोड़ा टावर दुनिया रा व्होत वड़ा ब्रादमी वर्ग है।" कम्मू रै ब्रव्वा है ग्रांख्या गिली होगी ।

ग्रर एक दिन कम्मू ग्राप रैस्हेर रो व्होत वडो नैता बण्यो।

वमी रा साईसर/।

#### बटाऊ

एक गाय हो। यो गाय रै मायं मुक्ती रो घर हो। घर रै चारू मेर बादी बाड़ हो। घर में एक बोदो भूपड़ो हो। भूपड़ै रार्किबाड़ सीलिएये रीजेंबड़ी मूं गूँघ्योड़ा हा। बीं रै घर री हालत ऐड़ी ही जाणै सगळै गांव री गरीबी भेळी होय'र घठै जमगी ही।

मुगो गांव रै ठाकर ग्रर बीर्ज लोगां रै ग्रठै लोरसो कर'र आप रो ग्रर ग्राप रै बरस दमेक रै बेटे लिछु रो पेट पाळै ही ।

एक दिन लिछू बार्र भूं घायो । वो घाप री मां नै उदास देखी । यो पूछ्यो, 'मां काई बात है ? तूं घाज इनरी उदास वयूं है ?'

पैली तो मुखी कीं फोनी बोली। पछै वा श्राप री श्रांख्या में श्रांस् भरंर बोली, 'बेटा गांव रै लोगां री किरपा सूं थारी बैन रा हाथ तो पीळा होग्या। परा सबै बीं नै सासरे गई नै चार पांच मईना होबगा ने श्राया है। उपर मूं राखी रो पैलो तिवार है। उरा नै किकर युलावां ? म्हारै कन्नै तो कीं कोनी ?'

गळी रा लाडेसर/१६

लिछू बोल्यी, 'मां, ऐड़ै मोके मार्थ ठाकर सा द्वांपणी मदद कोर्न करैला काई ?'

सुक्षी कैयो, "वेटा, ठाकर सा आंपिणी घरणी मदद करें है पर्ण''!" लिछू बिचार्ल बोल्यो, 'पर्ण, तूं भो तो ठाकर सा रै अठै सगळा सूं

सुखी लिछु रै मूंडै मार्थ हाय रासती कैयो, "नीं वेटा ग्रागे कीं <sup>सत</sup>

घर्गो स्रोरसो करें हैं। श्रर अर्व जेन्वे श्राप कानी सूं मदद कोनी करें तो पूं ठाकर सा नै उथलो देय दें श्रर •••• ।"

कैयी। ठाकर सा रा आंपणे मार्थ अस्मित्सात उपकार है। अर आंपसी आं संस्कृति है क किस्म रै करयोड़े गुस्मां ने नी सूलस्मो चाईजे। फैर जै किस्म रो बूस्म पास्पी आपां खा लेवां तो भी रै लूस्म पास्पी ने कदेई नी लजावणी चाईजें?"

निञ्च पूट्यो, "तो नूए पाएंगे नै नजावएंगे भी श्राप्रशी संस्कृति हैं कांई मां ?"

मुसी कैया, "हां बेटां, या भी यांपणी संस्कृति है ।"

्मुक्षी री मांस्वी डवडवा माई। वा बोली, 'बेटा जद हूं हो। बरसी े मार्र बाषू ने सूणासर रेचीवरी रेगून रेज्जाम मार्य पुलिस

ताम मायं पुलिस गडी रा मार्रेगर/२० पकड़ लेय गी। उसा टैम थारै बापू नै ठाकर सा राज रै जवाटा मायं मूँ छडा लाया।"

''तो म्हारो बापु खुनी हो कांई ?'' लिखु पूछ्यी।

"भीं वेटा थारो बापू खूनी कोनी हो।" सूखी बीली!

"तो, पुलिस म्हारै बापू नै क्यूं पकड़यो ? मनै गांव रा छोरा केवै है क इस री वाप खूनी हो। भाज तो मां, मा वात मनै पूरी बतासी पडसी।" लिछु जिद करगानै लागग्यो ।

मुखी लिछू नै बिलमावरण री घर टाळण री घरणी कोमीस वरो। पण वी री एक ई कोनी चाली । लिछू स्नापरो यात मार्थ ग्रह यो रेयो सर बार बार पूछतो रेयौ, "काई म्हारो बापू खूनी हो ? ग्राज तो, मा तर्ने पूरो वात बतागाी ईज पडसी।"

धेकड सुखी नै बाल हठ रै सामी भुकली पड़बी घर या बनायी,

<sup>"बेटा</sup>, प्रापण गांव रै ठाकर सा घर लुगासर रै चौधरी रो प्राप्तन मेत ने नेय'र प्रणादिनां सूंभगड़ो चाल रेयो हो । एक दिन टाकर सा गाव रे पर्णमारे लोगां मूंबी सेत में निनास करवाय देया हा। धारी बार् भी ज्या में हो। इतरे में लूए।सर रो चौधरी धाप रै लोगों नै लेव'र वी अन मार्च पूर्त्यो । पर्छ घापस में बांसिया बाजरा लाग्या । बुग्त डारी किंगा रेटाय कृषी भगडे मार्य लूगामर रै चौधरी रो छून होग्यो । बर दाउसमा राग्छी

ठाकर सा मार्थ आग्रुग्यो ।"

"तो पर्छ म्हारे वापू नै पुलिस क्यू पकड़यो ?" लिछू श्राप री मां हुं उथलो पूछ्यो ।

ठाकर सा नै शारे बापू माधी पूरी भरोसो हो क जे '' शारी बापू बीं चौधरी नै मारले री हां भरले तो ठाकर सा थारे बापू नै जेळ कोनी होबए देवेला । थारो बाप हां भरलो । ठाकर सा आप रा बचन निभाषा। अर राज रे जवाड़ा मायं सूंथारे बापू नै छुडा लाया।

पण ठाकर सा वेथाग जतन करण पर भी मौत रै जमदूत री बांध्यां है थारे बापू नै कोनी छुड़ा सक्या बीं टेम थारे बापू री अरथी कन्ने बैठ'र समूर्ग गाँव रै आर्ख लोगां सामी ठाकर सा थ्यो परण कर्यो हो क भोमें री गुवाड़ी रें भार आज सूंम्हारे माथे हैं। जद सूं आज तोई ठाकुर सा री पूरी किरपा है। इस खाज तोई ठाकुर सा री पूरी किरपा है। इस खातर महें किए रै गुण अर लूस पासी ने हराम कोनी कर सकूं। एडो करणो आपसी संस्कृति अर आपसी संस्कारा रो अपमान है बेटा।"

लिखू दस बारह बरस में पैली बार सचाई नै जासी अरंद वो छोटी सो टींगर सोच री गैराई में दूबग्यो ।

इतर में ठाकर सा उण रे घर आयग्या। विङ्क्ष नीचे माये सूं ठाकरता नै भुक'र मुजरो कर्यो। सुखी आपरी गीली अस्या ने भटापट आपरी लूगड़ी सूं पूंछ'र मुंघटो काढ़ वियो। ठाकर सा मुळक'र बोल्या, मुखी भाभी ग्राज दोनू मां वेटो उदास

सुकी बोली, "धृण्या आप री छत्तर छाया में की अवसाई कोनी। भगवान आप नै वृत्ताया राखे।" 10693

न्यूं हो ! कांई ग्रवखाई है ?"

ठाकुर सा केयो, "भी भाभी कोई बात तो है पए तूं म्हारे मूं खिनार्थ है। पए कोई बात कोनो में लिछू सूंपूछ'र रैवूंला।" ब्रर ठाकर सा लिछू रै सिर मार्थ लाड सूंहाथ फैर'र पूछ्यो, "काई बात हैं'र लिछ ?"

िल्छू री बाह्यां में ब्रांसू बाग्या बर गुबक्यां लेपतो केयो, ''ठाकर

सा बाई नै राखी रै तिवार मार्थ ·····?"

ठाकुर सा विचाल है बोलस्यो, "क कियां लायां । भाषा बावळा हो

रोत्र मां वेटा ? इतरी सो दात सन्तर उदाम होयाया ? मर्बेन्, ज्यमन है । भाज ई रावळे मूँ ऊंठ लेयजा । घर सरचै गातर की पईंचा भी लेब चाई ।

हात ई रावळ मूं ऊंठ लेयजा। घर सरचे गातर की पर्देशा भी केंच आई घर राषा ने एक दो दिन में लेयर घठ पूरा जाई।"

मुखी घर लिछू रै चैरे मार्थ जुसी री वैर दोडगी। पिन मोही रहर में मुखी जदास होय'र सोचए। लागी क भी छोडो मो टोनर छोगी में हिना

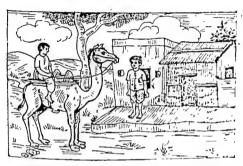
े उन प्रवास होये र सावता लागा के ब्रा छोड़ा को टाकर छोड़ के राजक नेपार सातो ? ब्रो तो मारत ई बोनी जागे । पछे बार्ट टा, बार्ट बार्ट बर्ट सार्ट बर दोरप रो सामनो करतो पड़ेला? पण, जीवड़ा दल ने तो घरण हुन भेल्यां ई सुख मिले ला। घर वा ग्रा सोच'र श्रापरै जी नै घर्णां करड़ो कर लियो ।

बीजै दिन ठाकर सा लिछू रै जार्रो री त्यारी करदी। तिछू छे मार्थे चढ'र स्नाप री बैन राधा ने लैंबरा ने बहिर होम्यो।

गरम्यां रादिन हा। लिछू श्राप रैगांव मूं सिंझ्या रो वहिर होषी वो श्रा सोची क काल दिन उमें भीर में ई वाई रैसासरै पूग जा वृंता श्र श्रगले दिन बाई नै लेय श्रावृलां।

लिछू वहिर हुयो उरा टेम श्राभो साफ हो । वो श्राप र गांव पूँ कोस दो-ऐक पूर्यो होसी । रात पड़गी । अर पूरैं छोड़ में अन्धेरो ई अन्धेरो छाय ग्यो हो। उतराद पास हळकी हळकी वीजळीं छोब हो । देखता ई देखता। वा रात मेह अन्धेरो रात होगो । वादळ्यां री गरज काना रा पड़दा फाड़ने लागगी । कड़कती विजळी छोड़ न सैचनरा कररा न लागगी । अर भूसळी घार पासो वरसस्य न लागगी । लिछू टावर हो । पसा वो घवरायो कोती । श्राप प्राप रो माखलो छोढ र ऊंठ माथ बैठयो रैयो । उंठ चालतो रैयो । ऐड़ी मेह अन्धेरी रात मायं उंठ डगर वदळ लीनो ।

थोडी देर में दिखणादी पून चाली । बादळ खिंडग्या । ब्राभ रो ाफरो उत्तरग्यो ऊंठ एक गांद में पूरयो । गांव में पूरी सुनसान ही । एक ी में चानणो टिमटिमाबो हो ।



लिखू भाप रै ऊंठ नै उसा घर रै धार्ग रोकार पूछ्यो, 'मर्ट सई काई जार्ग हैं, तो बताध्रो क इसा गांव रै चौधरी रो घर कर्ड रै

तिष्टू मूँ उमर में यस्त चारैक बड़ो ऐक होरो बारै हावो हर पर व्तर में कैयो, "गांव रे चौधरी रो घर झो ई है। तू कुछ है ?"

तिष्टू बोल्यो, "भाई महे तो बटाऊ हैं । घर मेह मधेरी रात में मारण क्षित्रों रात बाबो चाव है ।"

लिछू नै वो छोरो कैयो, "ग्राय जा भाई! रान वासो तेर नै ।

लिए ज्ला रै घर में ऊँठ ने सूँटै मूं बॉर्थर तिक्षाने से रूपो । 🗊

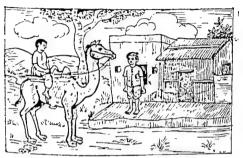
भेल्यां ई सुख मिले ला। ब्रर वा ब्रा सोच'र ब्रापरै जी नै घर्णां करड़ो का लियो।

बीजे दिन ठाकर सा लिछू रै जाएँ री त्यारी करदी। सिष्टू मार्थे चढंर आप री बैन राघा ने लैबए। नै वहिर होग्यो।

गरम्यां रा दिन हा । लिछू आप रै गांव मूं सिझ्या रो बहिर होये वो आ सोची क काल दिन उगै भीर में ई वाई रै सासरै पूग जा वृंताः अगले दिन बाई नै लेय आवृलां।

लिखू विहर हुयो उए टेम आभो साफ हो । वो खाप र गांव कोस दो-ऐक पूर्यो होसी । रात पड़गी । अर पूर खोड़ में अन्वेरो ई अर्थे छाय ग्यो हो। उतराद पास हळकी हळकी बोजळों खोक हो । देखता ई देसता वा रात मेह अन्वेरो रात होगी । वादळ्यां री गरज काना रा पड़दा फाई लागगी । कड़कती विजळी खोड़ नै सैचनए करएा नै लागगी । अर मूलळी धार पाएं। वरसएा नै लागगी । कर मूलळी धार पाएं। वरसएा नै लागगी । किछू टावर हो । पए। वो घवरायो कोनी । खाप रो भाखलो खोड र ऊंठ मार्थ वैठयो रैयो । ठंठ चालतो रैयो । ऐड़ी भेह अन्वेरी रात मार्थ ऊंठ डगर वदळ लीनो ।

थोडी देर में दिखणादी पून चालो । बादळ खिडखा । आभै रो ग्राफरो उतरम्यो ऊंठ एक गांव में पूरमो । गांव में पूरी सुनसान ही । एक तिवारी में चानणो टिमटिमावो हो ।



लिछू माप रै ऊंठ ने उसा घर रै मार्ग रोक'र पूछ्यो, "श्ररे भई कोई जामें हैं]तो बतामो क इसा गांव रै चोधरी रो घर कठे हैं ?"

तिष्टू मूं उमर में बरस चार्रक बड़ो ऐक छोरो बारै ब्रामो बर पड़ <sup>चतर</sup> में कैयो, "गांव रे चौधरो रो घर ब्रो ई है। तूं कुए है ?"

लिष्टू बोल्यो, ''भाई म्हं तो बटाऊ हूँ । ग्रर मेह ग्रंबेरी रात में मारग भूतियो रात बासो चाबू हूँ ।"

लिष्टू नै वो द्योरो कैयो, "ब्राय जा भाई! रात वासो लेय जैं।" लिष्टू उस्म रै घर में ऊंट ने खूट मूं वाध'र तिवारी में गयो। उस्म छोरै सूं रामा सामा कर्या।

. बो छोरो लिछू नै पूछ्यो, "तूं किसै गांव रो है । 🏋 🕻

"मैं मोठासर रो हूँ।" लिछू कैयो।

"काई साख में हैं ?" वो छोरो पूछयो।

"म्हें भींग हूँ।" लिछू वतायो।

"धारै वाप रो कांई नाम है ?" इस वार उस छोरै री ग्रास्यां में <sup>ही</sup> बी जी चमक ही ?

लिखू आप रे वाप रो नाम वर्ताताई वो छोरों भाग'र श्रांप रै घर रै मायं गयी। अर घर रा गूदड़ा श्रर वी जी चोजां ने श्रठीने फर्केल हैं शास्यों । इए विचाळ उए रों मां रो नींद उचटगी। उए री मां पूछ्यी 'किसना कोई वात हैं रे श्रर तूं कोई जोवें हैं ?''वो छोरो किसनो हांकर चढ़योड़ी बोल्यों "मां तूं महैने जल्दी बता गंडासो कर्ट हैं ?'' प्रव. वी री मां हड़वड़ा रे उठी, अर कैयों "श्रर कांई बात है किसना ? तूं गंडासों में पूछे हैं ?'' किसनो बोल्यों, "मां श्राज महार बाप ने कतल करिएये री बेटो म्हारो दुसमी महारे घर श्राम्यो है। अब महें उए ने जीवतों की जावए। देवूं ता। तूं मने गंडासो जल्दोसों बता।" किसने रो मां श्राप रो पूरी सगती मूं उए ने समक्तयों, ''तूं बावळो होग्यों कार्र ?'

ं गडी स सार्वेतर/स

स्य प्रश्नी नात से एक बटाज द्यानी है। पर्छ, घर द्रायों है बटाऊ से आब प्राट करणी प्राप्तानी संस्कृति है देटा ! चाब दो प्रांपणी दुसमण ई प्रयू नी हैं। इस स्वाप्त पर्व क्लार्ड हुद सी सोगत है क घर आयोड़ बटाऊ रै माथे हैं 7 की दार करेंगी तो नु कारी संस्कृति सो दुसमण है अरंतू स्हारो देशे कोती है।"

विसनी मां रे दूध दी सोगन की बात सुंग्री केंग्रें होग्यी । पेंग्र उस रेबाळेंद्र मार्च लाग्योटा लागकी भोभन कोनी तुभी । वो रीसां बळतीं तिवाँकी में दी पानर एक मार्च गार्च एक पत्थकरणी ग्रंट एक कामळ राखें दी ।

विष्टू किसने ने की कोनी बुभूयो । धर यो चूप चांप माँचै माथै <sup>प्</sup>षरप्यो । किसने री मां रो जी कोनी धाष्यो या सोच्यो, स्यात टीगर की कर

ित्सने री मां रो जी कोनी धाष्यों वा सोच्यों, स्यात टीगर की कर भी बठे? घर वा दूध रो कटोरो भर'र तिबारी में आई । आगे देखें ती घोडें मुंडें रो वरस दस बारह रो छोरो हो । वा उरा नै दूध रो कटोरो देख'र कैयों, 'बटा दूध पी लैं। आर जे तन्नी भूख है ती

भेड़ राबरस इस बायह रा छारो हा। बाउए न दूध रा क्टोरो देग'र कैयो, "बेटा दूध पीलैं। घर जे तनी पूख है ती जीवड़ो साबू, काई?" लिछू कैयो मा सा रात री बेळा ये क्यू कर्ट देलों हैं। रात रात कार्ट लेव ला?"

हैं। रात रात कार लेवू ला ?"

पण किसन री मां उरण ने खीचड़ो बाळीमें लाय'र दियों। बी

पोषेचड़ो घर दूप खाय'र सोच्यो आ लुगाई कितरी लिखमों है। घर भली

17

छोरै मूं रामा सामा कर्या ।

वो छोरो लिछू नै पूछ्यो, "तू किस गांव रो है।

"मैं मोठासर रो हूँ।" लिछू कैयो।

"काई साल में हैं ?" वो छोरो पूछयो ।

"म्हें भींग हूँ।" लिखू यतायो।

"थारै बाप रो कांई नाम है ?" इरा बार उरा छोरै री आर्स्या में बी जी चमक ही ?

लिखू श्राप रै बाप रो नाम बतांताई वो छोरों मार्ग र ग्राप रै प्रमाय गयी। ग्रर घर रा गूदड़ा श्रर वो जो चोजां ने ग्रठीने फर्किए लाग्यो। इए। विचाळ उए। री मां री नींद उचटमी। उए। री मां री निक्तना काई बात है हैं? ग्रर तूं काई जोकें हैं? ग्रेबो छोरो किसनो हो ए चढ़योड़ी बोल्यों "मां तूं महैंने जल्दी बता गंडासो कठे हैं?" ग्रबासों मां हड़बड़ा र उठी, ग्रर कैयों "ग्रर काई बात है किसना? तूं गंडासों पूछे हैं?" किसनो बोल्यों, "मां ग्राज महारे बोप ने कतल करिएये बेटो महारो दुसमी महारे घर ग्राम्यो है। ग्रव महें उए। ने जीवतों को जावए। देवूं ला। तूं मने गंडासों जलंदोसी बता।" किसते री प्राया री पूरी सगती मूं उए। ने समस्मायों, "तूं वाबळो होग्यो काई

मादर बरमी मादरमी संस्कृति है बेटा ! चार्च वो मादरमी दुसमेला ई क्यूं नी हुँवै । दम सातर तने स्कृति हुव से सोगन है के घर प्रायोड बटाऊ रे साथे है है वोर्ट बार करेनी भी तू स्कृति संस्कृति सो दुसमेला है घर तू स्हारो

हर प्राची रात में एक बटाऊ बाबी है । पर्छ, घर बाबोड़े बटाऊ रो बाब

पर पान्यात्य राशानानू स्टास सन्द्रात सादुसम्सा ह घर तूम्हास देशे कोनी है।" विसनों मॉर्फ्ट्यूस सोसन की कात सुंस्पेंट चूंप होन्सी। पेंस सस्

वाळने मार्च लाग्योदी नायरी भोभर कोती बुभी । बो रीसां बळती तिवारी के वा साम मार्च मा

लिए किमने नैकी कीनी बुक्षी। ग्रार वी चूपंचीप मींचै मार्थ

निष्टू निष्टम्यो । है। कितरै हेत हुलराव सूंबात करी है। लिखू नै ग्रापरी मां<sup>यार</sup> श्रायगी।

उठी नै किसनो श्राप री मां नै इस भांत हेत सूं वात <sup>करता</sup> सुगा'र तातै तैल में गुलगुलै दांयी तळीज रैमौ हो ।

मूं अधार लिखू आप रै ऊठ ने त्यार करयी अर सीच्यी हैं माण किएामू ई वाई रे सासरे रो भारग पूछ लेवू ला। अर वो ऊठ ने लेय'र उठ सुंबहिर होयम्यो।

पर्ण किसने ने नींद कोनी आई। वो लिखू रे लार ई आप रें ऊठ मार्थ जीन कस र मूंड मार्थ डाटो मार'र हाथ में गंडासी लें<sup>दी</sup> दूर्ज मारग सूंगांव रें गौरवें आ पून्यी।

अब सूरज री किरए। री शोमो धीमो उजास घरती मार्ष कृतए। वै लाग्यो । खोड़ में पंखेरुआं री चींचाट सूंचळ-पळ होवए। नै लागी। विष् आपरी धुन में ऊठ मार्थ बैठगो जाय रेयो हो । इतर में किसनी गरजी "भ्रो जातोड़ा बटाऊ ठैहर! अब तूं जीवतो कोनी जावेलो ।" विष् हक्को-वक्को रेयग्यो। वो बोल्यो "भाई तूं कृषा है ? प्रर थारो में कृषि विगाड़यों हूं ?"

किसनी कैयों में, "वो ई हूं जिए। र घर तू रात वासो लियों हैं।

धर तूं नों विगाड़मो है थारो वाप म्हारे वाप रो सून कर्यो है। इस लातर क्षो वदळो में रात नै ई लैवती हो परा म्हारी मां कैयो घरे पायोड़े वटाऊ रो भादर करसी ब्रायसो संस्कृति है कर वा क्षाप रै हुष री सोगन दिराय दी नीं तो रात ई म्हैं तन्नै मार काडसो।"

लिछू डील-डोळ में किसनै जैड़ों ही हो । पए जद किसनो भापरी मां री बतायोड़ी संस्कृति री बात कैयी तो लिछू नै भी धाप री मां री बतायोड़ी संस्कृति री बात याद आयगी क किए। रो ई लूए पाएगी सायोडो हिराम नों करएगै चाईजे । अर किए। रै उपकार नै कदें ईनी मूलग्गो चाईजें । ब्यूं के लिछू रात बासो किसने रै घरै लियो हो भ्रर किसन री मां रै हाथ रो द्या खीचड़ों सायो हो । ई बात नै लेय'र लिछू आप री मां री बतायोड़ी संस्कृति री बात मूँ बंबयों हो । यो किसने मार्थ हाय उठावरांगो कोनी बातो हो । एए किसनो तो लिछू री जान लेबए। नै उतार हो ।

इतर में गांव रो मानीतो पंडित बरस साटैक रो उनर रो नारायण राम द्वाप रे सेत कानी जाबो हो। उस्त नै उस्त दोना रो रोटो नुग्गीन्सी तो वो उटै पमस्यो।

किसनो माप रें गोडां नीचे लिखू ने दबा राख्यों हो । मर यो बीरे निर मार्थ गंडामो बाषण बांछो हो इतरें में नारायण राम गंडानो पनड लिसी मर दकाळ्यों "मरें म्रो नाई जल्म करें हैं बेईमान।" किसनो बोल्यो, ''दादा म्रो म्हारै बाप रै दुशमी रो बेटो है <sup>इसा नै</sup> मैं ज्यान सूंमारै बिना कोनी छोड़ुं।''

पंडित नारायण गंडासै नै इतरो जोर सू पकड़यो हो क किनं जैड़ा चार किसना भी उरण रै हाथ सू गंडासो कोनी छुडाय सका हा। पंडित बा दोना ने अळगा अळगा कर सगळो बात पूछी। पर्छ पंडित नारायण कैयो 'किसना तू घर आयोड़े बटाऊं रै आव आदर री संस्कृति निभाई। अर लिङ्क तू किएग रै उपकार अर लूए पाणी ने हराम नी करणे री संस्कृति निभाई। जे म्हारी नूवी पोढी इएग भांत आप रै देस रो संस्कृति ने जाएग लेवे तो आज आपां ने सत रै मारा

मूं कोई कोनी डिगा सके । परा एक संस्कृति आपराँ देस रो ओर है क आप मूं बड़े रो कैसो मानसो चाईजे । इस खातर महैं बुड़ो बड़ेरो होसाँ रे नाते आ कैदसी वातूं हूं अर यां दौनू नै म्हारी आ बात मानसी पड़ेली क होबार बाली बात हो होससो । जह तं इस नै रात

मानए। पड़ेली क होवए बाळी बात तो होयगो । जद तूं इए नैरात भाई कैय दियो ग्रर ग्रो तन भाई कैय दियो तो ग्रव थे भाई-माई हो। इए। सातर भाई-भाई में ऋगड़ों गाँव खातर देस खातर समाज खातर ग्राच्छो कोनी हुवे है।

म्हारो स्रो केसो है क ये दोनू गळै मिलो । स्रर इस री वैन <sup>नै</sup> लेवस नै प्रापां तोनू चालां । वा म्हारो बेटी है । धर यां दोना री बहन <sup>है ।</sup>

किमनो भर लिख्नुगर्ळ मिलग्या। भर येतोनू उए दोनू <sup>उठी</sup> े वैठेर लिख्न रो यहन मैं लेवसा नै यहिर होग्या।

### गळी रा लाडेंसर

एक छोटे स स्हेर रै मोहल्ले रो गळी ही । बीं गळी रा टाबर, दिन जमें मूं दिन विस्सूं जै ताई तबड़का मारता फिरता हा । काई ठा वे किए माटी रा पड्योड़ा हा ? राम जाएं, वे किए टेम तो रोटी खाबता हा ? पर किए टेम वे न्हावता-धीवता हा ? जद देखो, जद वे तो ई गळी मू वी मेळी ताई भागता, नासता, घर हाका मचाबता ई दिखता हा !

बीं गळी मोहले रा लोग उएा मूं घएगई तंग हा।

में गळी रो ईज, एक बुढ़ो-बर्टरी-स्याली घर धोरै मुशाव रो बज्जू दोदो हो। यो उस्स गळी रै टाबरा नै इस्स दसा माय देस'र श्री मायं घली दौरप करती हो।

बज्जू दादो मन मायं सोचतो हो क मगर्छ माईतां नै मार माय शे भौताद घाछो लागे है। वे उला नै पढ़ा लिखां र भला मिनस विद्यादण ग भोचें। पण, इला गळा रै लोगां से सोच नै काई टा नाई होयम्यो े ना नो वे माप माप रै टीनस कानी ध्यान देवें मर ना है वां नै इल बारे माद कोई बिता है ? ऐंड सोच मायं हून्योड़ो वज्जू दादो ग्राप रै घर री चौकी माये खड़्यो हो । इतरै मायं उरा रै घर रे आगे सूं कई टावर हाका करता, भगता, नासता, जावा हा।

बज्जू दादो भट घर सूं बारे ग्राय'र उसा नै रोक'र पूछ्यो, "होरी यारो डील काई लोहे रो बस्पयोड़ी है ? या उसा मायं कोई मसीन लाग्योड़ी है ? बावलो ! धै दिन भर तबडका मारता फिरो हो, याने कोई केवस वाळो कोनी ?"

एक डेढ़ होशियार छोरो बोल्यों, "दादा थांरी तर्या घोळी दाड़ी ग्राग पछे म्हें भी इस भांत ड बात करांका।"

इतरो बोल र वो छोरो आप रे सामै बाळ छोरां नै केयों, मागी अ भागी ! अर वे छोरा हाका मचावता भागरा नै लाग्या !

वज्जू दादे री लुगाई आप रै घररे आंगणे माय खड़ी ऐ सगळी बात सुरण रेयी ही ! या आप रे घरणी ने केयी, "धाने कितरी बार वेयी हैं क धी टींगरां ने मूंडे मत लगाया करों । वयू क ऐड़ी तो आ बिगड़ेल श्रीतार है अर ऐड़ा ईं आं रा मायत है ।"

थौड़ी देर रूक'र वा बोली, "ई गळी रा ब्रर इस मोहल्ले रा स<sup>गळी</sup> ोग ब्रां छोरां माथै लोजी है । ब्रां ने ललकारै भी बस्मा ई है । पस, चोक्सी षड़े माधौ जे छांटां रो झसर हुनै तो झां छोरा माधौ फटकार झर ललकार रो कीं झसर हुनै !"

बज्जू दादो था मुरा'र चुन होवस्यो । घर वे दोन्नं ग्राप रे धर मार्म पत्ना गया ।

एक दिन गळी रा सगला लोग भेळा होय'र बोल्या जे सगळ दिन-गळी रा टाबर, इए। भांत उधम मचावता रेया, धमा चोकड़ी पालती रेया. भर गळ्यां मायं रूळता रेया ती टाबरां रो नास ती हुबेलो पए। साम ई पापां सगळां रो सुख चैन भी हराम होबेलो। इतर माय एक जरागै बोल्यो, "ती काई करां ?"

भीं नै उपनो मिल्यो, "भई घाप-घाप री ग्रीलाद नै स्टूलां मार्स पढ़ए नै भेजो । इए। मूं टायर भी सुधार जावैना ग्रार गळी मोहल्ले माय प्रांति भी रेबैली।"

ज्या लोगां मार्य वज्जू दादों भी सङ्घौ हो। यो वोल्यों, "भागा, ने दावरों ने गळी मार्य धाति राख्या सार स्टूल भेजी हो, तो धार रो भी सीचली महने तो ठोक कोनी लाल्यों। बल्ति, धार्पा ने तो टाइरों ने स्टूल रेख सातर भेजसा है क ये दो धार्पर पट-तिव'र भया मिनस दर्म। भाररी जिस्मेदारी समर्थ धर धार धार्य क्षांच्य ने निभावे।"

एक उसी दोल्पी, "बज्जू दादी दात तो देने से वेवे हैं। परः दादा...... दादो बोल्यो, "परां, क्यां री? नाया, स्कूल सू आयां पर्छ, प्राप र टावरां ने मायत आ पूछे क आज वां ने स्कूल मायं काई पहायों? अर काई लिखाओं, ? फेर वां ने घरे विठा'र घंटा दो घंटा स्कूल रो काम भी करवावों। क्यू क आज काल रा मायत वडै-चडै स्हेरां मायं प्राप र टाव्र्रां ने कपड़ा लत्ता पेराय 'र, रोटो-वाटी खुलाय'र अर वस्तो-पाटी देगेर स्कूल टौर देगे है। अर, हां वां री स्कूल री फीस जमा कराय'र आपरी जिम्मेदारी खतम होवराो समक्त लेवं है। परा इरा सू टावर जठ आप र मां-वाप रे लाड प्यार सू कटै है वठं ई वे आप रे घरां र संस्कारां सू भी दूर होवता जावें है।"

इतरें में उठ खड़्यों लल्लू जोर सूं हांस्यों । सगळा लोग वीं मा देखरा नै लागग्या।

वो बोल्यो, "वज्जू दादो तो पून में बाता करें है। दाद नै काई ठा टावर किया पाळीजें है? दाद रे खुद रे तो औलाद है कोनी। मो तो ही लोगा नै सीत देवें है। परण दादा प्रणी तप है वां रा जी जाण है क प्री री तप किसोक हवें है?"

लल्तू री मा बात बज्जू दाई रै काळवे मायं घाव सो करगी। हर वो कसमसा'र रेमग्यो।

इतर्र में तल्तृ धार्ग केयो, "माई लोगां ये. चावी जितरा होते स्रोतस्यो, परा ई गळो रा नार्डमर तो खाज मुधरे नी काल । बयू क हो <sup>ह</sup> <sup>पीयत</sup> मजूरी माथै जाने या आंटींगरां ने दादो बतायौ वियां सुधारै ?"

लल्लू नै एक जाएँ। उथली दियाँ, 'देख रै लल्ल तू' तो पायरी लल्ल है। दादैरी बात साचो है। क भ्राज रो जुग पढाई लियाई री जुग है। हिणे सूँ ज्ञान वर्ष । आज री दुनियां मायं काई होय रेयो है इस री जास ारी मिलै। इए जाए कारी सूं वो आप रो भलो-वरो सोचै। वयुं क रणपढ़ री जमारो भी कोई जमारो हवै है काई ? अरणपढ तो विना सीग

[छ रै जिनावर दायों हुवै है।" अबै आ बात सगलां जिए। रै जचगी क आप-आप रै टाबरां ने

जूल भेजए। है।

यागल कई दिनां मार्य गळी रा घएकरा टावरां नै वांरा मायन कूल भेजगा सर कर दिया।

यवै मोहल्लै, गळी, गुवाड मार्य शांति रैवसा नै लागगी।

एक दिन बज्जु री निजर गुवाङ री चौकी मार्थ पड़ो । जठै एक छोगे उदास मन सूं चूप-चाप:बेठ्यौ हो । बज्जू बाप री जुगाई धापो नै बृह्यौ,

"भो टोंगर किए। रो है ? घर भ्रो स्बुल वयूं कोनो गयौ ?"

षापो बीं टींगर कानी देख'र बोली, बो'ई तो वो छोगे है जिसी वी दिन यारे सामी चयेळिया करती हो क थोली दाही बाबा पर्ध दादा में भी रेण भांत बात बरालां । घर साची पूर्वा तो, मी ई छोगे है जिनो साछी



गळी रै टींगरा रो नास करएाँ माथै तुल्योड़ी हो।

वन्जू पूछ्यो, "परा स्रो है कुरा ?"

धापो, बज्जू रै कन्नै म्राय'र बतायो, 'भ्रापराी गळी रै मायं एक दारूकोर लीलियो हो नों ? बीं री लुगाई टीलकी हो । टीलकी नै टी बी री बोमारी हो । बा तो बापड़ी भ्रववेई में ई मरगो । लीलियो कोई गयीबाळ रांड सू नातों कर'र कठैई निकळग्यो ।"

वज्जू मूंकला'र बोल्यो, "तूंभी साब गेली है। महें तने बूमूं हैंगों प्रोरो कुए। है ? अरतूंलीलिये अर टीलकी रो रांडी रोबणी सेव<sup>'र</sup> े।"

षापो घोरत मुंबोली, "ध्यावम रास्त्री, सगळी बात बताऊं हूं।"" . भो छोरो डीलकी मो है। इसार एक माई छोर होक्ती हो। उसारो ठा

कोती क प्रवै वो कठे हैं ?" पर्छ पापो एक लावो सिसकारो लेख'र बोली, <sup>"मंड</sup> रो लोलियो तो कठै ई बी रांड रै मागे मरस्यो, ग्रर ग्रां टींगरां नै ष्ट्री गुवाह रा करायी ।"

दरजू, घाषों रै मुटि कानी देरयो, तो यी नै लखायों क धारो रै मुंडे भाषे जदासी है भार बी दें मन मांग दया रा भाग है।

बज्जू घोड़ी देर तांई गोच मार्य द्रवस्यो । फेर बोल्यो, ''तो स्रो टींगर क्टें रेवें है घर इस नै रोटी कुमा घाते है ?"

घापो बतायो, "कई दिना ताई तो द्यांदोनू नै क्यांरी भूका रोटो

पालती ही घर बर्ट ईज रैदता हा। परा भूधा रॉड भी खोड़ीली, निकळी। 🥍 दो को दोतूं ने ब्राप रेघर मूंकाट दिया। एक तो कठें ई चल्यों गयो अर्

मो एक ग्रठ रेय ग्यौ।" बज्जू पूछ्यां, "फेर...

घापों केयो, "फेर काई \*\*\* मो गळी गळी मागतौ फिरै है अर आप रो पेट भरे है ,"

बज्जू सोच्यो, क धापी रेमन मायं ग्रांटावरां रै बादत ऊंडी पीङ है। पर्छ वो घीरै सूंघापा नै बूह्यो, "धापो, जे थारै जर्च, तो गळी रैई

यद्धी रा लाईमर/६७

लाडैसर नै म्रापां रोटो सट्टै राख लैवाँ । म्रो म्रांपणै घर रो सोस्ती<sup>ः कस्ती</sup> स्रर म्राप रो पेट भरसी ।"

थोड़ी देर रुक्त'र बज्जू श्राप रै मन रो बात कैयों ''जे इस टींगर मायं भलेरा संस्कार हुया तो श्रागै चाल'र श्रोई श्रापसी बुढ़ार्प रो सावरी बस्स जावेली।''

बज्जू री स्नाबात सुग्ग'र धाषो नै लाग्यी जाणै तातै तबै मार्थै पाएँ। रा छांटां नांख्या है। स्नर बा रोस मांब स्नाब'र बोली, "स्वाराौ, वे गैती बातां क्यूं करो हो ?"

वज्जू पूछ्यो, "किया ?"

धापो बोली, "नीं तो मो आपस्पी जात विरादरी रो है। ब्रर तीं ई मो आपस्पी रिस्तेदार है। अर दूजी बात झा है क ऐड़े बिगड़ेल टा<sup>वरी</sup> मोय भलेरा संस्कार कर्ठ सूं आबीला ? जिसा रो बाप ऐबीली दार घोरियो अर गईबाळ हुवै। उसा रा टाबर काई तो आपसी बुडाप रा सावरी वर्णेला अर कांई सुधरैला ?"

वज्जू मुळक'र वोल्यो,"धापो, मिनल मिनल सगळा एक सरीता कोर्गी हुवै है। जात पांत घर रिस्तेदारी तो वर्णाया वर्ण है, भागवान ! धर्व रेपी मंस्कारां री यात इग्ग वायत तो तूं मुण्यो होवैला क कदई घ्राक मार्य धा<sup>प्र</sup> हुवै है। स्थात, उग्ग जिड़े वाप रो थ्रो बेटो भलो भी वर्ण सक<sup>है।</sup> फेर, लोग तो बिगर्ङल जिनावरों नै ई मुधार लेवे है। ग्री तो मिनल रो बीज है। आपाई भी इए नै मुधार सकां हां? धाप 'र रोटी मिनेली भापणा लाड प्यार मिलेली तो ग्री भी भलो मिनल बएा जावेली। पढ़ें बिना मां-चाप र टाबर नै पाळणौ मिनलां खातर धर्म रो काम भी है।"

पए, घापो रैमन मार्य बज्जू री बात ढूकी कोनी। या बोली, 'यै भेषां रै बाळे मांय मत बेबी। कई सोची ? क्यू क इरा री भूधा घर मार्दन वै रोज कोई बसेडी राखेला तो पछे ग्रापां काई करालां ?'

यज्जू केयों, "देख धापू, धन तो षण्या रो हुनै है गुवाळिने रै हाथ गांव तो गेडियो हुनै है । जे ने पूठो मांगेला तो घापां दे देवांला ।"

धापो तड़क'र बोली, "पै'लो नयूं तो मांवा ततां ? मर पर्छ नयूं दो जिमालां ? मापण ऐंड़ों काई मड़ी है ? क मापां इस्स टीमर ने पाळ-पोन र बेटों करों । पर्छ या तो मी माछो कोनी भीवड़े या इस्स रामना निव जावें । इस्स में मापां ने काई फायदों है ? जद रामको ई स्हारी कूल में टावर कोनी दिया तो गळी रैटींगरा मूं किसी मांत टस्डी हुवें है ?"

पए बज्जूरे काळवें मांच तो नाल्यू से बात सो पाव पानो भोटों हों । बज्जू पायों हो क यो दुनिया ने दिसा देवें के प्रापत-प्राप रैटायसों ने तो समळा ई पाने हैं । दूजों रैटायस ने क्या साहित्य है ? इए रो जवाब लल्लू नै दैवूं।

बज्जू हेत सूं धापो नै समकावता थका केयी, 'धापो, ग्राप्' नाक री माखी तो सगळाई उडाव है।"

घापू, बज्जू सूं जयलो मांग्यो, 'धै कांई कैवएो खाबो हो ?" बज्जू बोल्यो, ''धापो, म्हारो मतलब हो क दूजां रै टावरां <sup>नै</sup> पाळएगी, पोसएगो-आर वा नै अंगैजर्कों, हेजर्को घर्को दोरो कां<sup>म है।</sup> अर जे आपा इए काम नै करां तो ओ धर्म रो मोटो कांम हो<sup>बैता।</sup>"

इएा विचाल घापो री निजर गली में पड़ी । वा देख्यो, क<sup>्र</sup> पावस्योड़ी वकरी दो तीन छोटै-छोटै कुकरियां नै खड़ी चुंगाय रेबी ही ।

श्रा कूकरिया री मा थोड़ा दिना पेली एक गाड़ रे नीच प्राव<sup>1</sup>र सरगी ही । बकरड़ी ने कूकरिया खातर पावस्योड़ी देख'र धार्प, योड़ी देर रातर श्राप रो श्रापी भूलगी । पछ, जद वा श्राप रे श्राप <sup>मार्प</sup> श्राई तो वीं रे हिबड़े रो श्रंतस मां री ममता मूं छळक उठ्यो। बा सोच्यो जद एक बकरी, कुत्तो रे जायोड़ा कूकरियां ने हैंज'र श्राप री दूध पाय सके है तो म्हें एक मिनख रे जाये ने बोनी पाळू हुई ! श्रर वा पगा मायं पगरशो घाल'र वीं चौकी ताई श्राद भ्रवक वितरी ताळ में जाय पूगी । जठ वो टींगर श्रापरी धुन में बेट्यी हो ।

यो टींगर धापों नै एका एक आप रै कन्नै खड़ी देख'र घबरावी। वी रै मूर्ड मूं अवाग्यक दैनिकलायो, "मां · · · महें · · · महें · · · गाँ

गळी रा सार्वपं

फेर वो मोर्च्या तूं इस्तु नै मां किया देवी ? श्रवं श्रा तन मारेला । फिर को उठंद भागस्तु ने लाग्यो । पस्तु धायो बी रो बांबडी पकड़ली । बी ने पुचकार्यो । बी से लाइ कर्यो । फेर बी ने आप रै घरै मार्वर बोली, दिस्तु, बेटां ध्रवे तूं श्रा गळ्या मार्य गोता खावतो या उठती कोनी फिरेलो । ध्रवं सूं तूं स्हारं घर ई रेबोली ।"

यो छोरो धापो कानी, उतर्योड वेर मूं फाट्योड़ी आंख्यां सूं ग्रर <sup>प्रचंचे</sup> मूं देस रेयो हो ।

षापो बोलो, "धाज मूं तूं म्हारो बेटो है । ग्रर म्हैं थारी मां हूं।"

दतरो केवता ई यो छोरो घापी रै बांध घाल'र सुबक्या भररा नं भाग्यो।

बज्ज गे मन फूल्यों कोनो समायो । घर उरग री आंख्यां सूं खुशी रा मांत्रू इळकरण नै लाग्या ।

वो छोरो बोल्यो, "मां !"

वो छोरो बोल्यो, "म्हैन मोतो केवे है। श्रर म्हारो एक भाई मोर हो को स नाईकर/४१ वीं रो नाम माग्एक हो । स्रवे वो कठै है। म्हेंनै तो कई ठा कोनी, वो जीवै या॰॰॰॰॰?'' इतरो केय'र वो छोरो डुस्क्यां भरण नै लागयो ।

घउजू वीं नै पुचकारता धकां केयो, "देख, आज सूरं थारो नाम मोती लाल है। खर थारे दूर्ज भाई रो भी म्है पतो लगाऊंला। खबै तूं रो मत ग्राज थारे तातर पाटो बस्ती त्या देवूं ला ग्रर तन्ने स्कूल पढ़ण ने जावणी t 1"

मो छोरो मज्जू री बात सुरा'र डुस्क्यां भरती-भरती चुप होयायो।

शर गन में राजी होय ग्यो ।

पर्गा धापी बोली, "म्हैं तो इसा नै लाडलो ई केंद्र ला । मुस्सों लाडलै रा मार्ज मं आपां इसा स्हेर ने छोड'र किसा ई टूर्ज स्हेर में सार्क पर उठ ई इए नै स्कूल में पहरा-लिखरा सार भेजां ता।

रताला गर्भ मर्ठ इस रो बाप या भूत्रा बसेड़ा घालेला।"

ब<sup>ज्जू</sup> रै मार्थ मांय घापो री ग्रा वात जचगी । ग्रर वो छोरो <sub>पन भायं घरा</sub>ौई राजी हुयो ।

द्मवै वे यम्बई जेड़ै वड़ै नगर मायं रैवला नै लागग्या ।

मांय वज्जू मोती नै एक सांतरी स्कूल मायं पहरा नै भरती करी + री पूँजी सूं वीं नगर मार्य प्राष्ट्रों सो एक घंघों सर कर दियों !

पर वे सुख सूं घाप रो समै काटएानै लागग्या । समै बोततौ गयो-बोततो गयो पर मोती पढ लिख'र एम. ए. पास होग्यौ । वीं नगर रै मायं मोती रो भाई <sup>माएक</sup> भी रेयवतौ हो ।

माराक जिरा टेम इरा नगर में ब्रायी हो, उरा टेम वो इरा नगर रो मोटी मोटी सड़का मार्थ रूळती फिरती हो।

एक दिन वो एक मोटैं स बंगल रै मार्ग खड्बी हो। बंगल रो मानिक एक मोटौ प्रफसर हो। वो श्रफसर रो वेटी बरस दसेक री ही। जद बा अपरी स्कूल बस मूं उतर'र झापर बंगळ मार्य जाय रेयो ही तो गुन्टा उए मार्थ कामळ नाख'र उरए में उठाय रै भागए। नै लाग्या। इनरें में नेएक जोर-जोर मूं हाका करणें नै लाग्यी। लोगवान भेळा होगगा। बी क्रेरी रा मां-बाप श्रर नौकर चाकर भी उएए बंगल मार्य नूं बारे प्रायन्ता। मुंडा उरए नै छोड'र भागग्या। बी छोरी नै उरए रा मां-बाप वर्ग्य रे मां लेक्या। माएक भी बी छोरी रे सार्ग उरए वंगल माय बड़ग्री।

वी छोरी रो नाम नीलम हो । बी रो बापू पूछ्यो, "बेटा, नीनृ वां ेंडा रो चेरौ प्रर गाभा लत्ता किएा भांत हा।"

नीलम केयी, "डेडी महैन तो ठा ईज कोनी पड्यी।"

देतर में नीतम रो निजर माएक मार्थ गई। वा ओर हा केरी, देशे भो छोरो नों होवतो तो भाज : \*\*\* । "दनरी केप'र डा रोकस्स वीं रो नाम माराक हो । श्रवं वो कठ है। महैंने तो कई ठा कोनी, बो बोवें या ·····?'' इतरो केय'र वो छोरो डुस्क्यां भररा ने लागमो।

वज्जू वीं नै पुचकारता थकां केथी, "देख, आज सूं थारौ नाम मोती लाल है। अर थारै दूजे भाई रो भी महै पतो लगाऊंला। अर्व तूं रो मत आज थारै खातर पाटो बस्तौ ल्या देवूंला अर तन्ने स्कूल पढ़ए नै जावएं है।"

बो छोरो बज्जू री बात मुरा'र डुस्क्यां भरती-भरती चुप होपणी। ग्रर मन में राजी होय ग्यो।

पर्साधापो बोली, "म्हैं तो इसा नै लाडलो ई कैवूं लां। सुणों लाडतं र बापू, ग्राज सूं ग्रामां इसा स्हेर नै छोड'र किसा ई दूर्ज स्हेर में रैवांला ग्रार उठै ई इसा नै स्कूल में पढसा-लिखसा सार भेवां ता। म्यूंक ग्राठै इसा रो वाप या भूग्रा बखेड़ा घालैला।"

वज्जू रै मार्थ मांय धापो री ब्रा बात जनगी। ब्रर बो <sup>हुंरी</sup> मन मायं घराो ई राजी हयो ।

श्रवै वे बम्बई जेड़ै वड़ै नगर मायं रैवए। नै

वीं स्हेर मांय वज्जू मोती नै एक ः दियो । वज्जू भ्राप री पूँजी सूं वीं नगर मोती रै कलक्टर बर्गिन सूं धापो ग्रर बज्जू फूल्या कोनी समावा है। वेटेरे बंगर्च मांग स्नाप रो बुढापो मुख सूंकाट रेया हा। पर्स्त एक के । फाट्योड़ा गाभा। बघ्द्योड़ी दाड़ी। चेरे मार्थ भुर्या पड्योडी एक भेगल,बी रै लारे वीं हाल में ई एक लूगाई ग्रर तीन चार छोरी छोरा नागे हैं। कलक्टर मोती रैबंगले मांग वे जावर्गी चावा हा। परग्पेर मारी सङ्गा



देशेन कर र महे चल्या । जांबाला इतरे में बब्द में निवर सिटिंग्ड व नियम्बार्यकानी गई। बब्दू सिपाइयां ने देयों, "बा न, माद मादगदन ।

नै लागगी। नीलम रो बाप ग्रर मां नीलम नै पुचकार र दूप करी। श्रर वीं छोरै नै पूछ्यों, "बेटा तूं उसा लोगां रै चैरे ग्ररगाभावतां रै बारै में बताय सके है काई ?"

मारणक उरा नै सगळी बात बताय दी। अर बो आपरै बारै में भी बतायों। नीलम रो बाप उरा गुँडा नै पकड़ नै साह पुलिस बालो मार्ग टेलीफोन कर दी। अर नीलम रो बाप मारणक नै दस रुपया देवल नै लाय्यों तो नीलम री मम्मी केयों, "श्राज सूं श्रो बिना मां-बाप रो टींगर आपर्ण अठै रेवेंलो अर नीलू रै सार्थ स्कूल जावेलों आवेलों।" नीलम रो बाप मानक्यों।

भवें माएक उस्प रै घर रो काम काज भी करें अर नीलम रे सार्ग पढसा लिखसा ने भीं जावें। पछे दिन-दिन उस्प दोनां मायं हेत हो वस् ने लागस्यो।

माराक ग्रर मोती दोनूं एक स्हेर रै मायं रेवता थकां एक दूस<sup>ई पूर्व</sup> वर्दई निल कोनी सबया।

टेम बोतती गयो । बीतती गयो । दौनु भाई एक दूर्ज री सकत मृत्त भूलग्या । पण दोनुं ई पढ लिख'र । खाई. ऐ. एस. खर आई. पी. एस. रै इमितहान में पास होयग्या । घर नीलम भी आई. ए. एस. में पास होवनी ।

प्रवे मागुक एस. पी. बस्तुम्यो । नीलम कलक्टर बस्त भी । घर मीती भी कलक्टर बस्तम्यो । मोती र कलवटर बग्ग में पूर्व घर बज्जू फूल्या कोनी समावा है। वेटेरें बंग में मांय धाप रो गुडापो मुख मूं काट रेसा हा। परा एक कि। फाट्योड़ा गाभा। बघ्द्योड़ी दाड़ी। चेरे माथ फुर्गं पड्योड़ी एक निनस्त्री रे लारे बीं हाल में ई एक लुगाई धर तीन चार छोरी छोरा सागे हैं। कलवटर माती रेबंग में मांय वे जावरणी चावा हा। परा पेरे माथ खड्या विपाई बांगी फिड्य र बोल्या, "जाक्री, अवार साब बंग ले में कोनी। बा



री दर्शन कर र म्है चल्या । जांवाला इतरे में वज्जू री निजर गिड़गिड़ायते <sup>विनस्त</sup> सुगाई कानी गई । वज्जू सिपाइयां नै केयो, "धां नं, मांग *धाव*राह्यो ।

नै लागगो। नीलम रो बाप श्वर मां नीलम नै पुचकार र इप करी श्वर बीं छोरें नै पूछ्यों, "बेटा तूं उरा लोगां रै चैरे ग्ररनाभाल रै बारें में बताय सके है काई ?"

माएक उए। नै सगळी बात बताय दी। अर बी ब्रापरें बारें में में बतायों। नीलम रो बाप उए। गुँडा नै पकड़ नै सार पुलिस घाए। मार देलीफोन कर दी। अर नीलम रो बाप माराक नै दस रुपवा देवए। लाग्यों तो नीलम री मम्मी केयी, ''ब्राज सूं ब्रो बिना मां-बाप रो टॉम आपरें अर्ठ रेवेलो अर नीलू रै साबै स्कूल जावेली ब्रावेली।'' नीलम रं बाप मानग्यो।

अवे माएक उरा रै घर रो काम काज भी करें अर नीलम रै सांगें सागें पढ़ एा लिलाए ने भीं जावें। पछ दिन-दिन उरा दोनां मामं हेत होवां, ने लागस्यो।

माएाक श्रर मोती दोनूं एक स्हेर रै मायं रेवता धकां एक दसरैं मूहे कर्दर्द मिल कोनी सक्या ।

टेम बोतती गयो । बीतती गयो । दौतू भाई एक दूजे री सकत मूर : भूलग्या । परा दोतूं ई पढ लिख'र । आई. ऐ. एस. अर आई. पी. एस. रू इमतिहान में पास होयग्या । अर नीलम भी आई. ए. एस. में पास होयगी :

श्रवं मासक एस. पी. वसाग्यौ । नीलम कलक्टर भी कलक्टर वसाग्यो । मोती फट उठ'र एस. पी. रैसामें गयो। इतरे में धापो धर बज्जू, भेनू जर उए रै टावरा नै लेय'र बंगले रै मांय बड़ायां।

वंगले रे बाग मार्थ माराक अर मोती दोन सरकार री कोई ऐडी वान में उळक्या क दोनूं दिन उने रे आठ नी बजे सूं इग्यारह बजे लाई औ

री बात मुक्की ईज कोनी । इतरे में लीलू नै नया गाभा पेराय 'र बर्र सुर्वारे इतय'र बजू बाग रै एक पेड़ नीचे बैठ'र बाता करएा नै सागयो ।

मोती ग्रर एस. पी. मासक दोनूं हांसता हांसता भागा।
भोती री निजर बजूकने नया सभा पेरयोई भादमी मार्थ गई।
एम. पी. मासक भी उठीनै देख्यो।

मोती बोल्यो, "एस. पी. साव, एं म्हारा वापूजी है। बां, एम पी. रेपता ई बोल्यो "बज्जू दादा ?" बज्जू हक्को बक्को रेग्यो । एम पी योत्यो, "बज्जू दादा, महे थारै लीजू रो बेटो हैं। बार्ट टा प्रवे म्हारी

बाप कठ है ?"

बज्जू चुटको लेख'र बोल्यो, "बारो एक भार्ट भी हो । बो
सन्दे कठे है ? धाप एस. पी. हो उन्हारों भी पनी लहाफ्रों ।"

भी कठे है ? भ्राप एस. पी. ही उत्तर से भी घरा प्राप्त है हुई हुउई "कुउई "भाई तो गांव में कठेई गोज सावजो हुनैता, पण बाढ़ हुई हुउई हुउई के विष्ट गया पर्छ महासे सुध-दुध है बोती भी ।" मालब दोली ।

शील प्राप रे दोतें होया स् मायो प्रत्योगों सोवों ही भी में मूं मूंबो किया दियाओं है मर दिया देहें व दो सभी वो मिनल हाथ जोड़्योड़ो रोवती रोवती बोल्यो, "वज्जू, काका महैं यारी काळी गाय हूँ। तूं मनै माफ करदै। मैं कई जीवस ताई थारो उपकार कोनो उतार सकूला तूं मनै माफ करदै।"

वज्जू री बूढी ब्रांख्या पिछाए। नै में देर कोनी करी, "ग्ररै तीतू ? तूं जीने हैं ?" वज्जू अर्चने मूं पूछ्यो । लीलू केयो. 'दादा, म्हैनै तो मर्यो ई कई वरस होयग्या । मनी दुनिया में जीनए रो कोई हक कोनी म्हैं तो मर्योड़ी ई हूं । पए। गांव गयो तो मने इए। सगळी बातां रो ठा लाग्यो ग्रर म्हैं थारै उपकार ने म्हारो सोस नवावए। नै ग्रायो हैं । बस .....!'

मोती रात रै गाऊन में हाथ में ब्रखवार लियोड़ी वज्जू रैपर्ग लाग'र मूडै पर बैठता यका पूछ्यो "ऐ लोग क्रा है ?"

वज्जू बोल्यो, "वेटा, ऐ धन रा धर्गी है।"

मोती ग्रचरज मूं बोल्यो, ',धन रा घणी ?"

इतर में घापो साड़ी पेर्बीड़ो, चश्मो लगायोड़ी बाग में बाई।" बज्जू मुळक'र घापो नै बोल्बो, "धापू देख कुरण श्रायो है ?"

धापो कड मूं पिछागा'र बोली ''ब्ररे लोलिया क**ँ** हो बेटा <sup>इता</sup> दिन ?''

सीतिया नाम मुख'र मोती रैं डील मार्य बीजळी सी दौड़गी। बी मनळा कानी मोचको सो देन रेयो हो। इतरें में एक सिवाई मावर ---ो, "साव ! एन. गो. माव ! प्यार्या है।" मोती भट उठ'र एस. पी. रे सामै गयो । इतरे में धापो झर वज्जू, गितू बर उसा रे टावरा ने लेय'र बंगले रे मांय बड़म्यूं। । किल्लिस बंगले रे बाग मार्थ मासक झर मोती बीतू सरकार सी कोई ऐड़ी

वनल र वान माथ माएक अर माता बातू सरकार ए काड एक है। वा में उळ्ळ्या क दोनूं दिन उने र प्राठ नो बर्ज सूं इंग्यारह उर्ज ताई बोर बात मुकी ईल कोनी। इतरें में लोतू ने नया गाभा पेराय 'र अर्द्धकुर्वरिंगाप'र यज् बाग र एक पेड़ नीचे बैठ'र बाता करए ने लागयो।

मोतो ग्रर एस. पो. माएाक दोनूं हांसता हांसता आया । गेती री निजर बजु कनै नया गामा पेरयोड़ ग्रादमी मार्थ गई ।

(स. पी. मालुक भी उठीन देख्ये। मोती बोल्यो, "एस. पी. साब, ऐ म्हारा बापूजी है। बो, एस. पी. देखता ई बोल्यो "बज्जू दादा ?" बज्जू हक्को बक्को रैग्यो। एस. पी. बोल्यो, "बज्जू दादा, म्हें थार लीजू रो बेटो हैं। काई ठा प्रवे म्हारो बाप कठे है ?"

वज्जू चुटको लेय'र बोल्बो, "यारी एक माई भी हो । यो मधै कड़े है ? प्राप एस. पी. हो उसा रो भी पतो लगायो।"

"माई तो गांव में कठेई गोता साबतो हुनैला, पण बारू दूबी लुगाई मैं लेप'र गया पछ म्हारी मुख-बुध ई कोनी ली 1" माएन बोल्यों।

लीलू ग्राप रै दोनूं हाथां सुमायौ पक्ट्योजो सोंचो हो . मों मैं महें मूंडो कियां दिसाऊं? ग्रर कियां केंद्रें के यो 💍 📆 म्हैं ई हूँ जिको दो हीरांरी पारख कोनी कर सक्यो । ग्रर दर, दर ग्रे भीख मांगतो रेयौ।

परा बज्जू वां दोनां नै ग्राप रै छाती सूँ चिपकार बोल्गो, <sup>गृह</sup> क्रो है बारो भाई माएक जिको क्राज कलवटर बरायोड़ी बारी स खङयी है। ग्रर ग्रो है थां दोतूं रो वाप लीलू।"

एक दोषी मिनख दायी लीलू खड्यो होय'र की केवतौ इतर में वे दे भाई लीलू रै पगांरै हाथ लगायो । लीलू वांनै छाती सू चिपकाया

वांरो लाड करता थका लीलू री ब्रांख्या सूं ब्रांसू छळका हा । भापू श्रर लीलू री दूजी लुगाई वां टावरां सागै दूर खड़ी ऐ सगई

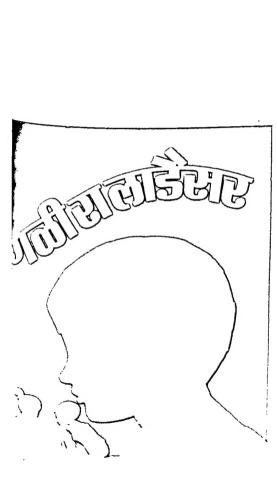
वातां देख रेयी ही। वजू घाषो नै केयो, "खड़ी काई देखें है घन घिएाया रो है गवांडिंग

रो तो गेडियो है । ला म्हारो गेडियो ग्रर ग्रापां गांव चालां ।"

पए। वे सगळा वां रै पगां पड़ग्या ग्रर बोल्या, "मिनला जूणी देविंगियां देवी, देवता समान अर्व ये म्हारे जीवरा नै सूनो कर कोनी जाय सको । श्राज थै दो श्राखर पढाई रा नी कराया होता तो ऐ भला दिन देखण नै कोनी मिलता।"

बोल्यो, "वेटा श्रा सगळी माया पटाई री है।" इतर में कलक्टर रों कार मूं मालुक नै लेवण नै ब्रायगी।

26.4.90





जलम Sterr

रचनावा

अब्दल बहीद 'कमल'

-१७ अप्रेन १६३६ ई. नारसरो, ने. संग्दार शहर जि.नूर

- गम ए की एड, -फिल्म राइटसं एसोजियसन बम्बई रा मदस्य

— फिल्म ''माटी री म्रासा मापशे कहाम्यी पर बसा र त्यार (राजस्थानीम) -फिल्म 'गोगी ' आप री कहारती पर बसा रंबी है (राजस्थानीम)

फिल्म''रम्म''ग्रर 'परायायत' कहाण्या पर हिन्दी में फिल्म वर्णन साह **मन**विवन

दम का निपाही (हिन्दी एकाकी नाटक) १६६४ ई.

- उकळती घरनी उफामता धामो (राजस्थानी कवितावा) १६६६ ई.

--हाऊई रो घोरो (बाल राजस्थानी उपस्थाम) १६८० ई.

गळीरा नार्टमर (बन्स राजस्थानी कहाण्या)१६०६ ई.

— रला, घर मगीन रा विजेप लेग विशिष्ट पोथ्या माय छप्या । !

— राजस्थानी माहित्य मस्त्रृति मस्यान 'विस्तप्र' स सस्यापक ग्रंग मन्दि ।

